IH 4312

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता

उपन्यास

(चारो भाग)

बाबू देवकीनन्दन खत्री

रचित

लहरी बुक डिपो

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

काशी

सस्ता संस्करण]

Price 1/8/-

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है)

साधारण संस्करण

मूल्य Price 1/8/-

भूमिका

[प्रथम संस्करण से]

आज हिन्दी के बहुत से उपन्यास हुए हैं जिनमें कई तरह की बातें वो राजनीति भी लिखी गई है, राजदर्बार के तरीके वो सामान भी जाहिर किए गये हैं, मगर राजदर्बारों में ऐयार (चालाक) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफन-मौला याने सूरत बदलना, बहुत सी दवाओं का जानना, गाना बजाना, दौड़ना, शस्त्र चलाना, जासूसों का काम देना, वगैरह बहुत सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून गिराये वो पलटनों की जानें गँवाये लड़ाई खतम कर देते थे। इन लोगों की बड़ी कदर की जाती थी। इन्हीं ऐयारी पेशे में आज कल बहुरूपिये दिखाई देते हैं। वे सब गुण तो इन लोगों में रहे नहीं सिर्फ शक्ल बदलना रह गया वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में अभी तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा। अगर हिन्दी पढ़ने वाले इस मजे को देख लें तो कई बातों का फायदा हो! सबसे ज्यादे फायदा तो यह है कि ऐसी किताबों को पढ़ने वाला जल्दी किसी के धोखे में न पड़ेगा। इन सब बातों का खयाल करके मैंने यह 'चन्द्रकान्ता' नामक उपन्यास लिखा। इस किताब में नौगढ़ वो विजयगढ़

दो पहाड़ी राजवाड़ों का हाल कहा गया है। इन दोनों राजवाड़ों में पहिले आपुस का खूब मेल रहना, फिर वजीर के लड़के की बदमाशी से बिगाड़ होना, नौगढ़ के कुमार बीरेन्द्रसिंह का विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता पर आशिक हो कर तकलीफें उठाना, विजयगढ़ के दीवान के लड़के क्रूरसिंह का महाराज जयसिंह से बिगड़ कर चुनार जाना और चन्द्रकान्ता की तारीफ करके वहाँ के राजा शिवदत्तसिंह को उभाड़ लाना वगैरह। इस बीच में ऐयारी भी अच्छी तरह से दिखलाई गई है और ये राज्य पहाड़ी होने से इसमें पहाड़ी नदियों दर्रों भयानक जंगलों और खूबसूरत वो दिलचस्प घाटियों का भी बयान अच्छी तरह से आया है।

मैंने आज तक कोई किताब नहीं लिखी है, यह पहिला श्रीगणेश है, इसलिए इसमें किसी तरह की गलती या भूल का हो जाना ताज्जुब नहीं जिसके लिए मैं आप लोगों से क्षमा माँगता हूँ, बल्कि बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप लोग मेरी भूल को पत्र द्वारा मुझ पर जाहिर करेंगे क्योंकि यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है आगे और छप रहा है, भूल मालूम हो जाने से दूसरी जिल्दों में उसका खयाल किया जायगा।

[आषाढ़ सम्वत् १९४४]

देवकीनन्दन खत्री

बाबू देवकीनन्दन खत्री की संक्षिप्त जीवनी

मूल लेखक बा० श्यामसुन्दरदास

संशोधक—डा० गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, एम०ए०, पी-एच० डी

मुल्तान के दीवान और ताल्लुकेदार लाला नौनिद्धिराय बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मुसलमानों के समय में वे मुल्तान के गवर्नर बनाये गये थे। दीवान शब्द से उस समय अभिप्राय आधुनिक राज्यपाल का ही होता था।

राजा रणजीतसिंह के समय में आपके वंश के लाला राधोमलजी सपरिवार लाहौर आ बसे। आप दीवान नौनिद्धिराय की आठवीं पीढ़ी में थे। राजा रणजीतसिंह के पुत्र शेरसिंह के समय में जब लाहौर में एक प्रकार की अराजकता सी फैल गई थी उस समय इनके पुत्र लाला अचरजमलजी के दो पुत्र (अर्थात् लाला राधोमलजी के पौत्र) लाला नन्दलालजी तथा लाला ईश्वरदासजी लाहौर छोड़ कर काशी चले आये।

लाला अचरजमलजी के पाँच पुत्र थे। लाला नन्दलालजी और लाला ईश्वरदासजी की सन्तति आगे चली, परन्तु लाला लालचन्द, लाला रामदास, और लाला कन्हैयालाल निःसन्तान थे।

लाला नन्दलालजी के तीन लड़के हुए—बाबू देवीप्रसाद, बाबू भगवानदास, और बाबू नारायणदास, और लाला ईश्वरदासजी के केवल एक—हमारे चरित्र-नायक बाबू देवकीनन्दन खत्री।

लाला ईश्वरदासजी की मृत्यु सन् १९०७ ई० में बहत्तर वर्ष की आयु में काशी में हुई।

खत्रीजी का जन्म संवत् १९१८ आषाढ़ कृष्ण सप्तमी शनिवार को मुजफ्फरपुर में हुआ। आपकी माता पूसा (मुजफ्फरपुर) के रईस बाबू जीवनलाल महथा की पुत्री थीं। विवाह के उपरान्त खत्रीजी के पिता लाला ईश्वरदासजी कुछ वर्ष तक पूसा और मुजफ्फरपुर में ही रहे और इसके पश्चात् काशी चले आये।

बा० देवकीनन्दनजी के बाल्यकाल के अधिकांश क्षण मुजफ्फरपुर में ही व्यतीत हुए और कुछ होश सम्हलने बाद आप पिता के पास काशी आये। बाल्यकाल में आपने ननिहाल में फारसी तथा उर्दू के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की। काशी आने पर आपने हिन्दी, अंगरेजी तथा संस्कृत का अध्ययन किया।

गया जिला के टिकारी राज्य में खत्रीजी के पिता का व्यापारिक सम्बन्ध था इसी कारण आपने गया में एक कोठी खोली। गयाजी की कोठी में खत्रीजी स्वतंत्र प्रबन्धक थे, वहाँ आपकी अच्छी आय भी थी।

खत्रीजी बड़े मौजी व्यक्ति थे। गयाजी में आपने पाँच हजार रुपये की केवल गुड्डी उड़ा डाली थी।

एक तो रुपया पास, दूसरे युवावस्था, तीसरे स्वतन्त्रता, तीनों ने अपना चमत्कार दिखाया और अपने पात्र से मनमाना नाच नचाया। कुछ दिन पीछे जब टिकारी राज्य में नाबालगी के कारण सरकारी प्रबन्ध हो गया और इनका उस राज्य से सम्बन्ध टूट गया तब ये काशी चले आये। उस समय इनकी अवस्था चौबीस वर्ष की थी।

टिकारी राज्य में बनारस के राजा ईश्वरीप्रसादनारायणसिंह की बहिन ब्याही थीं, इसी से यह बनारस में उक्त महाराज के कृपापात्र हुए। इन्होंने मुसाहिब बनकर दरबार में रहना तो पसन्द न किया परन्तु चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका ले लिया। इन जंगलों से लाह, लकड़ी, शहद, गोंद तथा और पैदावारों द्वारा अच्छी खासी आमदनी होती थी, और इसी के कारण आपको इन सब जगहों में घूमते फिरते

भी रहना पड़ता था। इसी अवस्था में इन्होंने जंगलों और पहाड़ों की खूब सैर की। इसी जमाने में उक्त जंगलों के बीहड़ बन, पहाड़ी खोहें, और प्राचीन इमारतों के अवशेष आदि दर्शनीय स्थान आपने बड़ी सावधानी से देखे।

कुछ कारणों से इन जंगलों का ठीका खत्रीजी को छोड़ना पड़ा और ये घर आ गये तथा वहीं पर रहने लगे। इसी समय इनको कुछ लिखने की धुन समाई और आपने चन्द्रकान्ता नामक उपन्यास लिखना आरंभ किया जिसका पहिला भाग काशी नेपाली खपड़े के हरिप्रकाश यन्त्रालय में बा० अमीरसिंह वर्मा द्वारा सन् १८८८ ई० में छापा गया।

इस पुस्तक में इन्होंने अपने गयाजी के युवावस्था के अनुभव और अपनी आँखों देखी जंगलों की बहार का वर्णन किया है।

जनता ने उन्मुक्त हृदय से चन्द्रकान्ता का स्वागत किया। लाखों व्यक्ति इसी पुस्तक की कृपा से हिन्दी के लेखक बन गये।

चन्द्रकान्ता और उसके बाद चन्द्रकान्ता सन्तति के ग्यारह भाग हरि-प्रकाश यंत्रालय में छपे। इसके पीछे सन् १८९८ ई० के सितम्बर मास में आपने 'लहरी प्रेस' नाम से अपना निज का प्रेस खोल लिया, तब से वहीं इस उपन्यास के आगे के भाग तथा आपके अन्य उपन्यास छपे।

आपके भूतनाथ, नरेन्द्र मोहनी, कुसुम-कुमारी, बीरेन्द्रबीर या कटोरा भर खून, काजर की कोठरी और गुप्तगोदना नामक उपन्यास और भी हैं।

खत्रीजी की कल्पनाशक्ति जितनी अद्भुत थी वैसी ही अद्भुत आपकी स्मृति शक्ति भी थी। इतने बड़े बड़े उपन्यास लिखते हुए भी आपने जीवन भर न तो कहीं नोट रक्खे न आगे का खाका ही कभी खींचा। बस पृष्ठ पर पृष्ठ लिखते जाना और प्रेस में भेजते जाना यही आपका काम था। कई बार ऐसा हुआ है कि मित्रों के साथ गप-शप कर रहे या गंजीफा अथवा शतरंज खेल रहे हैं और प्रेस से आदमी

आया कि इतने पेज की कापी घट गई है तुरत भेजिये। बस कागज कलम उठाया और लिख कर भेज दिया, और इस पर भी कथा या खेल दोनों ही में कहीं व्यक्तिक्रम नहीं।

आपने अपने निज के खर्चे से सुदर्शन नाम का एक मासिक पत्र भी निकाला था जो अपने समय के हिन्दी के प्रसिद्ध मासिक-पत्रों में था। पण्डित माधवप्रसाद मिश्र इसके सम्पादक थे। सम्पादक की मृत्यु के साथ ही सुदर्शन का भी अदर्शन हो गया।

बा० देवकीनन्दन खत्री जी ने हिन्दी साहित्य के एक अंग की पूर्ति द्वारा हिन्दी भाषा का बहुत उपकार किया।

आपका देहान्त १ अगस्त सन् १९१३ ई० को हुआ।

———

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता

उपन्यास

पहिला हिस्सा

पहिला बयान

शाम का वक्त है, कुछ कुछ सूरज दिखाई दे रहा है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं।

बीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कीस या बाईस वर्ष की होगी। यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता लड़का है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुंअर बीरेन्द्रसिंह का दिली दोस्त, बड़ा चालाक, फुर्तीला, कमर में सिर्फ खञ्जर बाँधे, बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिए, बड़ी तेजी के साथ चारो तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है। इन दोनों के सामने एक घोड़ा कसा कसाया दुरुस्त पेड़ से बंधा हुआ है।

कुंअर बीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, "भाई तेजसिंह, देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस दर्जे तक पहुँचा दिया। कई दफे तुम विजयगढ़ जाकर राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चीठी मेरे पास लाये और मेरी चीठी उन तक पहुँचाई जिससे साफ मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूँ उतनी ही चन्द्रकान्ता मुझसे रखती है, और हमारे राज्य से उसके राज्य के बीच सिर्फ पाँच ही कोस का फासला भी है, तिस पर भी हमलोगों के किये कुछ नहीं बन पड़ता। देखो इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि 'जिस तरह बने जल्द मिल जाओ'।"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "मैं हर तरह से आपको वहां ले जा सकता हूँ मगर

एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे उनके मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक हो रहा है, ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों *को जिनका नाम नाजिमअली और अहमदखां है इस बात की ताकीद कर दी है कि बराबर वे लोग महल की निगहबानी किया करें क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उनके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बंधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कान तक आपकी लगावट का हाल पहुँचा दिया है और इसी सबब से पहरे की यह सख्त तकीद हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहां जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूं।

"इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादा मानती है। सिवाय इस चपला के मेरा साथ देने वाला वहां कोई नहीं है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देख कर लौटूं तब आपके चलने के बारे में राय दूँ। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे बूझे काम करके हमलोग वहां ही गिरफ्तार हो जायं।"

बीरेन्द्र०। जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।

तेजसिंह०। मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद यहां आकर पुनः हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी में आये थे? अफसोस उस वक्त मैं यहां न था।

बीरेन्द्र०। मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फंसाया चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर अब तुम जाओ और जिस तरह बने चन्द्रकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। बीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल उस पर सवार हुए और अपने किले की तरफ चल चले गये।

* ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौडना उसका मख्य काम है।

दूसरा बयान

विजयगढ़ में क्रूरसिंह* अपनी बैठक के अन्दर नाजिम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बातें कर रहा है।

क्रूर०। देखो नाजिम, महाराज को तो यह ख्याल है कि मैं राजा होकर मन्त्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊँ, और चन्द्रकान्ता बीरेन्द्रसिंह को चाहती है, अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले? अगर सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊं, तो कहाँ जाऊं और कहाँ रह कर आराम करूं? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहले बीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी ऐसी जगह ले जाकर खपा डाला जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे, और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाय फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊंगा और तब अलबत्ते अपनी जिन्दगी में चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूंगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मारने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूंगा? लोग मुझे राजा कैसे बनाएंगे?

नाजिम०। हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभों को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें?

क्रूरसिंह०। अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।

अहमद०। तो बस ठीक है, आप इस बात का एकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें, मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूंगा।

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मजहब अख्तियार करने का एकरारनामा लिख कर फौरन नाजिम और अहमद के हवाले किया, जिस पर अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, "अब सब मुसलमानों को एक दिल कर लेना हम लोगों के जिम्मे है, इसके लिए आप कुछ न सोचिये, हाँ हम दोनों आदमियों के लिए भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिये कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वजीर मुकर्रर किये जायंगे, और तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिये कि बात की बात में जमाना कैसे उलट पुलट कर देते हैं!"

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी एकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाजिम ने कहा, "इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के

* इसकी उम्र २१ या २२ वर्ष की थी और

हालचाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत अच्छा है, चन्द्रकान्ता जरूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी विरह कहानी कहती होगी, इसलिए हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आजकल बीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है।"

यह कह कर दोनों ऐयार क्रूरसिंह से बिदा हुए।

तीसरा बयान

कुछ कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं। भीनी भीनी फूलों की महक धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही है। तरह तरह के फूल खिले हुए हैं। बाग के पश्चिम की तरफ वाले आम के घने पेड़ों की बहार और उसमें से बैठते हुए सूरज के किरणों की चमक एक अजीब ही मजा दे रही है। फूलों की क्यारियों की रविशों में अच्छी तरह छिड़काव किया हुआ है और फूलों के दरख्त भी फच्छी तरह पानी से धोए हुए हैं। कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिए की क्यारियाँ अपना अपना मजा दे रही हैं। एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊँचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर सुन्दर बुर्जियां अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला जो चालाकी के फन में बड़ी तेज और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है अपने चंचल हावभाव के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिए चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़ तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है, मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं, उसे तो दिल बहलाने के लिए उसकी सखियां जबर्दस्ती बाग में खींच लाई हैं।

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा तो गुच्छा बनाने के लिये फूलों को तोड़ती हुई मालती-लता के कुञ्ज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे धीरे टहलती हुई बीच के फौवारे के पास जा निकलीं और उसकी चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला०। न मालूम चम्पा किधर चली गई!

चन्द्रकान्ता०। कहीं इधर उधर घूमती होगी।

चपला०। दो घड़ी से ज्यादे हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।

चन्द्रकान्ता०। देखो वह आ रही है।

चपला०। इस वक्त तो इसकी चाल में फर्क मालूम होता है!

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और

कहा, "देखिये यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ! अगर इस वक्त कुंवर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको बहुत कुछ इनाम देते।"

बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही यकायक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल-मुख मुरझा गया, ऊँची ऊँची सांसें लेने लगी, आँखों से आंसू टपकने लगे। धीरे धीरे कहने लगी, "न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किये हैं जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा। देखो पिता को क्या धुन समाई है। कहते हैं कि चन्द्रकान्ता को कुंआरी ही रक्खूंगा। हाय, बीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिए कैसी कैसी खुशामदें कीं मगर उस दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उनको ऐसा कुछ अपने वश में कर रक्खा है कि कोई काम होने नहीं देता, और उधर कम्बख्त क्रूर मुझसे अपनी ही लसी लगाना चाहता है।"

यकायक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर धीरे से दबाया, मानो चुप रहने के लिए इशारा किया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टह लने लगी, मगर अपना रूमाल उस जगह जान बूझकर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने चम्पा से कहा, "सखी, देखो तो फौवारे के पास कहीं मेरा रूमाल गिर पड़ा है।"

चम्पा रूमाल लेने फौवारे की तरफ चली गई, तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, "सखी तैंने बोलते बोलते मुझे यकायक क्यों रोका?"

चपला ने कहा, "मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शुबहा हो गया है, उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।"

इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, "सखी, कल रात को मैंने तुझसे जो कहा था सो तैंने किया?" चम्पा बोली, "नहीं मैं तो भूल गई!" तब चपला ने कहा, "भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई!" चम्पा बोली, "बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा, "भला दोहरा के मुझसे कह तो सही, तब मैं जानूँ कि तुझे याद है!"

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कह कर कि 'मैं तुझसे एक बात कहूँगी' चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली, "देख तो चम्पा मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती? क्योंकि कल से कान में दर्द है!"

नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूँघने लगी। चपला चालाकी से बेहोशी की बुकनी कान में रख कर नकली चम्पा को सुँघा दिया जिसके सूँघते ही चम्पा बेहोश होकर गिर पड़ी।

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, "आओ सखी अपनी चम्पा का हाल देखो।" चन्द्रकान्ता ने पास आकर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देख चपला से कहा, "सखी कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा खयाल धोखा ही निकले और पीछे चम्पा से शरमाना पड़े!" "नहीं ऐसा न होगा!" कह चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता से बोली, "तुम फौवारे से चिल्लू भर भर पानी इसके मुँह पर डालो, मैं धोती हूँ।" चन्द्रकान्ता ने ऐसा ही किया और चपला खूब रगड़ रगड़ कर उसका मुँह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की सूरत बदल गई और साफ नाजिम की सूरत निकल आई। देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह बोली, "सखी इसने तो बड़ी बेअदबी की!"

"देखो तो अब मैं क्या करती हूँ!" कह कर चपला नाजिम को फिर पीठ पर लाद बाग के एक कोने में ले गई जहाँ बुर्ज के नीचे एक छोटा सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाजिम को ले जाकर लिटा दिया और अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकालकर जलाई। एक रस्सी से नाजिम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बांधे, और डिबिया से लखलखा निकाल उसको सुंघाया जिससे नाजिम ने एक छींक मारी और होश में आकर अपने को कैद और बेबस देखा। चपला कोड़ा लेकर खड़ी हो गई और मारना शुरू किया।

"माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मैं ऐसा कभी न करूँगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूँगा!" इत्यादि कह नाजिम चिल्लाने और रोने लगा, मगर चपला कब सुनती थी? वह कोड़ा जमाए ही गई और बोली, "सब्र कर, अभी तो तेरे पीठ की खुजली भी न मिटी होगी। तू यहाँ क्यों आया था? क्या बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी? क्या बाग की सैर को जी चाहा था? क्या तू नहीं जानता था कि चपला भी यहाँ होगी? हरामजादे के बच्चे, बेईमान, अपने बाप के कहने से तैंने यह काम किया! देख मैं उसकी भी तबियत खुश कर देती हूँ!" यह कह कर फिर मारना शुरू किया, तब पूछा, "सच बता तू यहाँ कैसे आया और चम्पा कहाँ गई?"

मार के खौफ से नाजिम को असल हाल कहना ही पड़ा। वह बोला, "चम्पा को मैंने ही बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूलों का गुच्छा उसके रास्ते में रख दिया जिसको सूँघ कर वह बेहोश हो गई, तब मैंने उसे मालती लता के कुञ्ज

में डाल दिया और उसकी सूरत बन उसके कपड़े पहिर तुम्हारी तरफ चला आया। लो मैंने सब हाल कह दिया, अब छोड़ दो!"

चपला ने कहा, "ठहर छोड़ती हूँ।" मगर फिर भी दस पाँच खूबसूरत कोड़े और जमा ही दिए यहाँ तक कि नाजिम बिलबिला उठा, तब चपला ने चन्द्रकान्ता से कहा, "सखी तुम इसकी निगहबानी करो, मैं चम्पा को ढूँढ़ लाती हूँ, कहीं यह पाजी झूठ न कहता हो!"

चम्पा को खोजती हुई चपला मालती-लता के पास पहुँची और बत्ती बाल कर ढूँढ़ने लगी। देखा कि सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है और बदन पर उसके एक लत्ता भी नहीं है। लखलखा सुंघाकर होश में लाई और पूछा, "क्यों मिजाज कैसा है, खा न गई धोखा!"

चम्पा ने कहा, "मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहाँ ऐयारी होगी? इस जगह फूलों का एक गुच्छा पड़ा था जिसको सूँघते ही मैं बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ। हाय, न जाने किसने मुझे बेहोश किया, मेरे कपड़े भी उतार लिये, बड़ी लागत के कपड़े थे!"

वहाँ पर नाजिम के कपड़े पड़े हुए थे जिनमें से दो एक लेकर चपला ने चम्पा का बदन ढांका और तब यह कह के कि 'मेरे साथ आ मैं उसे दिखलाऊँ जिसने तेरी ऐसी हालत की!' चम्पा को साथ ले उस जगह आई जहाँ चन्द्रकान्ता और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, "देख इसी ने तेरे साथ यह भलाई की थी!" चम्पा को नाजिम की सूरत देखते ही बड़ा गुस्सा आया और वह चपला से बोली, "बहिन, अगर इजाजत दो तो मैं भी दो चार कोड़े लगा कर अपना गुस्सा निकाल लूँ।"

चपला ने कहा, "हाँ हाँ, जितना जी चाहे इस मुए को जूतियाँ लगाओ!" बस फिर क्या था, चम्पा ने मनमानते कोड़े नाजिम को लगाये, यहाँ तक कि नाजिम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, "खुदा क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई!"

आखिरकार नाजिम को उसी तहखाने में कैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुईं। यह छोटा सा बाग जिसमें ऊपर लिखी बातें हुईं, महल के संग सटा हुआ उसके पिछवाड़े की तरफ पड़ता था और खास कर चन्द्रकान्ता के टहलने और हवा खाने के लिए ही बनवाया गया था। इसके चारो तरफ मुसलमानों का पहरा होने के सबब

से ही अहमद और नाजिम को अपना काम करने का मौका मिल गया था।

चौथा बयान

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुँचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरेवाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे। आखिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए? रात चाँदनी है, अगर अन्धेरी होती तो कमन्द लगाकर ही महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की सी बना महल की ड्योढ़ी पर पहुँचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, "यार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराजने हमको अपनी अर्दली में नौकर रक्खा है, इस वक्त छुट्टी थी, चाँदनी रात का मजा देखते टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूँक हम भी लगा लें, अफियून खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है आप लोग भी जानते ही होंगे!"

"हाँ हाँ, आइये बैठिये, तम्बाकू पीजिए!" कहकर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता हाँ हाथ से जरूर पी लूँगा।" यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

दो फूँक भी तम्बाकू के नहीं पीए थे कि खांसना शुरू किया, इतना खांसा कि थोड़ा सा पानी भी मुँह से निकाल दिया और तब कहा, "मियां, तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो? मैं तो हमेशे सरकारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गयी है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा ही नहीं लगता!"

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "लो तुम लोग भी पी कर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा, पीना क्या सपने में भी न देखा होगा? झट से हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई, भला तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू तो पी लें, तुम बड़े किस्मतवर हौ कि महाराज के साथ रहते हौ, तुम तो खूब चैन करते होगे!" यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमाकर तेजसिंह

के सामने लाये। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग सुलगाओ, फिर मैं भी ले लूँगा।"

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गए और नजर बाग में पहुँचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूँ तक न कर सकी और जमीन पर गिर पड़ी। तुरत उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब वह बेहोश हो गई उसे वहाँ से उठा कर किनारे ले गये। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आईना रख अपनी सूरत उसी के जैसी बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी का कपड़ा पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुँचे जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा दस पाँच लौंडियों के साथ बैठी बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बने हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, "क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ रही है?"

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि जिस लौंडी को मैंने बेहोश किया है या जिसकी सूरत बन कर आया हूँ उसका नाम केतकी है।

नकली केतकी०। हाँ काम करने तो गई ही थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिये लौट आई हूँ।

चपला०। ऐसा! अच्छा तैंने क्या देखा कह?

नकली के०। सभों को हटा दो तो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊँ।

सब लौंडियां हटा दी गईं और केवल चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा रह गईं, तब केतकी ने हँस कर कहा, "कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊँ।"

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद यह कुछ बीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर फिर यह भी सोचा कि मैंने तो आज तक कभी बीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया तब यह क्या मामला है? कौन सी खुशखबरी है जिसके सुनने के लिए यह पहिले ही से इनाम मांगती है? आखिर चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, "हां हां इनाम दूँगी, तू कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है?"

केतकी ने कहा, "पहिले दे दो तो कहूँ नहीं तो जाती हूँ।" यह कह उठ कर खड़ी हो गई।

केतकी के ये नखरे देख चपला से न रहा गया और वह बोल उठी, "क्यों रे केतकी, आज तुझको क्या हो गया है कि ऐसी बढ़ बढ़ के बातें कर रही है। लगाऊँ दो लात उठ के!"

केतकी ने जवाब दिया, "क्या मैं तुझसे कमजोर हूँ जो तू लात लगावेगी और मैं छोड़ दूँगी।"

अब तो चपला से न रहा गया और केतकी का झोंटा पकड़ने के लिए दौड़ी यहाँ तक कि दोनों आपुस में गुथ गईं। इत्तिफाक से चपला का हाथ नकली केतकी की छाती पर जा पड़ा जहाँ की सफाई देख वह घबरा उठी और झट अलग हो गई।

नकली केतकी०। (हँस कर) क्यों भाग क्यों गईं, आओ लड़ो!

चपला कमर से कटार निकाल सामने हुई और बोली, "ओ ऐयार, सच बता तू कौन है नहीं तो अभी जान ले डालती हूँ!"

इसका जवाब नकली केतकी ने चपला को कुछ न दिया और बीरेन्द्रसिंह की चीठी निकाल चन्द्रकान्ता के सामने रख दी। चपला की नजर भी इस चीठी पर पड़ी और गौर से देखने लगी। बीरेन्द्रसिंह के हाथ की लिखावट देख समझ गयी कि ये तेजसिंह हैं क्योंकि सिवाय तेजसिंह के और किसी के हाथ बीरेन्द्रसिंह कभी चीठी नहीं भेजेंगे। यही सोच समझ चपला शर्मा गई और गर्दन नीची कर चुप हो रही मगर जी में तेजसिंह की सफाई और चालाकी की तारीफ करने लगी बल्कि सच तो यह है कि तेजसिंह की मुहब्बत ने उसके दिल में जगह पकड़ ली।

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुहब्बत से बीरेन्द्रसिंह का खत पढ़ा और तब तेजसिंह से बातचीत करने लगी—

चन्द्र०। क्यों तेजसिंह, उनका मिजाज तो अच्छा है?

तेज०। मिजाज क्या खाक अच्छा होगा? खाना पीना सब छूट गया, रोते रोते आँखें सूज आईं, दिन रात तुम्हारा ध्यान है, बिना तुम्हारे मिले उनको कब आराम है। हजार समझाता हूँ मगर कौन सुनता है, अभी उसी दिन तुम्हारी चीठी लेकर मैं गया था, आज उनकी हालत देख फिर यहां आना पड़ा। कहते थे कि मैं खुद चलूंगा, किसी तरह समझा बुझा कर यहाँ आने से रोका और कहा कि आज मुझको जाने दो, मैं जाकर वहाँ बन्दोबस्त कर आऊँ तब तुमको ले चलूंगा जिसमें किसी तरह का नुकसान न हो। खैर किसी तरह समझ गए और तुम्हारी चीठी

का जवाब देकर मुझे इधर बिदा किया।

चन्द्र०। अफसोस तुम उनको अपने साथ न लाए, भला मैं उनका दर्शन तो कर लेती! देखो यहाँ क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों ने इतना ऊधम मचा रक्खा है कि कुछ कहा नहीं जाता। पिताजी को मैं कितना रोकती और समझाती हूँ कि क्रूरसिंह के दोनों ऐयार मेरे दुश्मन हैं मगर महाराज कुछ नहीं सुनते, क्योंकि क्रूरसिंह ने उनको अपने वश में कर रक्खा है। मेरी और कुमार की मुलाकात का हाल बहुत कुछ बढ़ा कर महाराज को न मालूम किस तरह समझा दिया है कि महाराज उसे सच्चों का बादशाह समझ गये हैं। वह हरदम महाराज के कान भरा करता है। अब वे मेरी कुछ भी नहीं सुनते, हाँ आज बहुत कुछ कहने का मौका मिला है क्योंकि आज मेरी प्यारी सखी चपला ने नाजिम को इस पिछवाड़े वाले बाग में गिरफ्तार किया है, कल महाराज के सामने उसको ले जाकर तब कहूँगी कि आप अपने क्रूरसिंह की सचाई को देखिए, अगर मेरे पहरे पर मुकर्रर किया ही था तो बाग के अन्दर आने की इजाजत इसे किसने दी थी?

यह कह कर चन्द्रकान्ता ने नाजिम के गिरफ्तार होने और बाग के तहखाने में कैद करने का बिल्कुल हाल तेजसिंह से कह सुनाया।

तेजसिंह चपला की चालाकी सुन कर हैरान हो गए और दिल में उसको प्यार करने लगे पर कुछ सोचने के बाद बोले, "चपला ने चालाकी तो खूब की मगर धोखा खा गई।"

यह सुन चपला हैरान हो गई कि या राम मैंने क्या धोखा खाया, पर कुछ समझ में नहीं आया। आखिर न रहा गया, तेजसिंह से पूछा, "जल्दी बताओ मैंने क्या धोखा खाया?" तेजसिंह ने कहा, "क्या तुम इस बात को नहीं जानती थीं कि नाजिम बाग में पहुँचा तो अहमद भी जरूर आया होगा? फिर बाग ही में नाजिम को क्यों छोड़ दिया? तुमको मुनासिब था कि जब उसको गिरफ्तार ही किया था तो महल में लाकर कैद करतीं या उसी वक्त महाराज के पास भेजवा देतीं, अब जरूर अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया होगा।"

इतनी बात सुनते ही चपला के होश उड़ गये और बहुत शरमिन्दा होकर बोली, "सच है, बड़ी भारी गलती हुई, इसका किसी ने ख्याल नहीं किया!"

तेजसिंह०। और कोई क्यों ख्याल करता! तुम तो चालाक बनती हो, ऐयार कहलाती हो, इसका खयाल तुमको होना चाहिए कि दूसरों को! खैर जाके देखो भी तो है या नहीं?

चपला दौड़ी हुई बाग की तरफ गई। तहखाने के पास जाते ही देखा कि दर्वाजा खुला पड़ा है। बस फिर क्या था? यकीन हो गया कि नाजिम को अहमद छुड़ा ले गया। तहखाने के अन्दर जाकर देखा तो खाली पड़ा पा अपनी बेवकूफी पर अफसोस करती लौट आई और बोली, "क्या कहूँ, सचमुच अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया!" अब तेजसिंह ने छेड़ना शुरू किया, "बड़ी ऐयारा बनी थीं, कहती थीं हम चालाक हैं, होशियार हैं, ये हैं, वो हैं। बस एक अदने ऐयार ने नाकों दम कर डाला!!"

चपला झुंझला उठी और चिढ़ कर बोली, "चपला नाम नहीं जो अबकी दोनों को गिरफ्तार कर इसी कमरे में ला बेहिसाब जूतियाँ न लगाऊँ।"

तेजसिंह ने कहा, "बस तुम्हारी कारीगरी देखी गई, अब देखो मैं कैसे एक एक को गिरफ्तार कर अपने शहर में ले जा के कैद करता हूँ!"

इसके बाद तेजसिंह ने अपने आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता और चपला से कह सुनाया और यह भी बतला दिया कि फलानी जगह पर मैं केतकी को बेहोश करके डाल आया हूँ, तुम जाकर उसे उठा लाना। उसके कपड़े मैं न दूँगा क्योंकि इसी सूरत से बाहर चला जाता हूँ। देखो, सिवाय तुम तीनों के यह सब हाल और किसी को न मालूम हो नहीं तो सब काम बिगड़ जायगा।"

चन्द्रकान्ता ने भी तेजसिंह से ताकीद की कि 'दूसरे तीसरे तुम जरूर यहाँ आया करो, तुम्हारे आने से ढाढ़स बनी रहती है।'

"बहुत अच्छा, मैं ऐसा ही करूँगा!" कह तेजसिंह चलने को तैयार हुए। चन्द्रकान्ता उन्हें जाते देख रो कर बोली, "क्यों तेजसिंह, क्या मेरी किस्मत में कुमार की मुलाकात नहीं बदी है?" इतना कहते ही गला भर आया और फूट फूट कर रोने लगी। तेजसिंह ने बहुत समझाया और कहा कि 'देखो यह सब बखेड़ा इसी वास्ते किया जा रहा है जिसमें तुम्हारे उनके हमेशा के लिए मुलाकात हो, अगर तुम ही घबड़ा जाओगी तो कैसे काम चलेगा?' बहुत कुछ समझा बुझा कर चन्द्रकान्ता को चुप कराया, तब वहाँ से रवाना हो केतकी ही की सूरत में दर्वाजे पर आये। देखा तो दो चार प्यादे तो होश में आये हैं बाकी चित्त पड़े हैं, कोई औंधा पड़ा है, कोई उठा तो है मगर फिर भी झुका ही जाता है। नकली केतकी ने डपट कर दरबानों से कहा, "तुम लोग पहरा देते हौ या जमीन सूंघते हौ! इतनी अफीम क्यों खाते हौ कि आँखें नहीं खुलतीं और सोते हौ तो मुर्दों से बाजी लगा कर! देखो मैं बड़ी रानी से कह कर तुम्हारी क्या दशा करवाती हूँ!"

जो चोबदार होश में आ चुके थे केतकी की बात सुन कर सन्न हो गए और लगे खुशामद करने—

"देखो केतकी माफ करो, आज एक नालायक सरकारी चोबदार ने आकर धोखा दे ऐसा जहरीला तम्बाकू पिलाया कि हम लोगों की यह हालत हो गई। उस पाजी ने तो जान से ही मारना चाहा था, अल्लाह ने बचा दिया, नहीं तो मारने में क्या छोड़ा था! देखो रोज तो ऐसा नहीं होता था, आज धोखा खा गये, हम हाथ जोड़ते हैं, आगे कभी ऐसा देखना तो जो चाहे सजा देना!"

नकली केतकी ने कहा, "अच्छा आज तो छोड़ देती हूँ मगर खबरदार जो फिर कभी ऐसा हुआ है!" यह कहते हुए तेजसिंह बाहर निकल गये। डर के मारे किसी ने यह भी न पूछा कि 'केतकी तू कहाँ जा रही है?'

पांचवां बयान

अहमद ने जो बाग के एक पेड़ पर बैठा हुआ था जब देखा कि चपला ने नाजिम को गिरफ्तार कर लिया और महल में चली गई तो सोचने लगा कि चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बस यही तीनों तो महल में गई हैं, नाजिम इस सबों के साथ नहीं गया, तो जरूर वह इस बागीचे में ही कहीं कैद होगा, यह सोच वह पेड़ से उतर इधर उधर ढूँढ़ने लगा। जब उस तहखाने के पास चहुँचा जिसमें नाजिम कैद था तो भीतर से चिल्लाने की आवाज आई जिसे सुन उसने पहिचान लिया कि नाजिम की आवाज है। तहखाने के किवाड़ खोल अन्दर गया, नाजिम को बँधा पा झट उसकी रस्सी खोली और तहखाने से बाहर लाकर बोला, "चलो जल्दी, इस बागीचे के बाहर हो जावें तब सब हाल सुनें कि क्या हुआ।"

नाजिम और अहमद बागीचे के बाहर आए और चलते चलते आपुस में बातचीत करने लगे। नाजिम ने चपला के हाथ फँस जाने और कोड़ा खाने का पूरा हाल कहा।

अहमद०। भाई नाजिम, जब तक पहले चपला को हम लोग न पकड़ लेंगे तब तक कोई काम न होगा क्योंकि चपला बड़ी चालाक है और धीरे धीरे चम्पा को भी तेज कर रही है। अगर वह गिरफ्तार न की जायगी तो थोड़े ही दिनों में एक की दो हो जायँगी यानी चम्पा भी इस काम में तेज होकर चपला का साथ देने के लायक हो जायगी।

नाजिम०। ठीक है, खैर आज तो कोई काम नहीं हो सकता, मुश्किल से जान बची है, हाँ कल पहिले यही काम करना है यानी जिस तरह हो चपला को पकड़ना और ऐसी जगह छिपाना कि जहाँ पता न चले और अपने ऊपर भी किसी को शक न हो।

ये दोनों आपुस में धीरे धीरे बातें करते चले जा रहे थे। थोड़ी देर में जब महल के अगले दर्वाजे के पास पहुँचे तो देखा क्या कि केतकी जो कुमारी चन्द्रकान्ता की लौंडी है सामने से चली आ रही है।

तेजसिंह ने भी जो केतकी के भेष में चले आ रहे थे नाजिम और अहमद को देखते ही पहिचान लिया और सोचने लगे कि भले मौके पर ये दोनों मिल गए हैं और अपनी भी सूरत अच्छी है, इस समय इन दोनों से कुछ खेल करना चाहिए और बन पड़े तो दोनों को नहीं तो एक को तो जरूर ही पकड़ना चाहिए।

तेजसिंह जान बूझकर इन दोनों के पास से होकर निकले। नाजिम और अहमद भी यह सोचकर उनके पीछे हो लिए कि देखे कहाँ जाती है। नकली केतकी (तेजसिंह) ने फिर कर देखा और कहा, "तुम लोग मेरे पीछे पीछे क्यों चले आ रहे हो? जिस काम पर मुकर्रर हो उस काम को करो!" अहमद ने कहा, "किस काम पर मुकर्रर हैं और क्या काम करें? तुम क्या जानती हो?" केतकी ने कहा, "मैं सब जानती हूँ। तुम वही काम करो जिसमें चपला के हाथ की जूतियाँ नसीब हों! जिस जगह तुम्हारी मददगार एक लौंडी तक नहीं है वहाँ तुम्हारे किए क्या होगा!"

नाजिम और अहमद केतकी की बात सुन कर दङ्ग हो गए और सोचने लगे कि यह तो बड़ी चालाक मालूम होती है, अगर हम लोगों के मेल में आ जाय तो बड़ा काम निकले और इसकी बातों से मालूम भी होता है कि कुछ लालच देने पर हम लोगों का साथ देगी।

नाजिम ने कहा, "सुनो केतकी, हम लोगों का तो काम ही चालाकी करने का है। हम लोग अगर पकड़े जाने और मारने मरने से डरें तो कभी काम न चले, इसी की पैदा खाते हैं, बात की बात में हजारों रुपये इनाम मिलते हैं, खुदा की मेहरबानी से तुम्हारे ऐसे मददगार भी मिल जाते हैं जैसे आज तुम मिल गईं। अब तुमको भी मुनासिब है कि हमारी मदद करो, जो कुछ हमको मिलेगा उसमें से हम तुमको भी हिस्सा देंगे।"

केतकी ने कहा, "सुनो जो, मैं उम्मीद के ऊपर जान देने वाली नहीं हूँ, वे कोई दूसरे होंगे, मैं तो पहिले लेकर काम करती हूँ। अब इस वक्त अगर कुछ मुझको दो तो मैं अभी तेजसिंह को तुम्हारे हाथ गिरफ्तार करा दूँ नहीं तो जाओ जो कुछ करते हो करो!"

तेजसिंह की गिरफ्तारी का नाम सुनते ही इन दोनों की तबियत खुश हो गई। नाजिम ने कहा, "अगर आज तेजसिंह को पकड़ा दो तो जो कहो हम तुमको दें!"

केतकी०। एक हजार रुपये से कम मैं हरगिज न लूँगी! अगर मञ्जूर हो तो लाओ रुपये मेरे सामने रक्खो।

नाजिम०। अब इस वक्त आधी रात को मैं कहाँ से रुपये लाऊँ, हाँ कल जरूर दे दूँगा।

केतकी०। ऐसी बातें मुझसे न करो, मैं पहिले ही कह चुकी हूँ कि उधार सौदा नहीं करती, लो मैं जाती हूँ।

नाजिम०। (आगे से रोक कर) सुनो तो, तुम खफा क्यों होती हो? अगर तुमको हम लोगों का एतबार न हो तो तुम इसी जगह ठहरो, हम लोग जाकर रुपये ले आते हैं।

केतकी०। अच्छा एक आदमी यहाँ मेरे पास रहो और एक आदमी जाकर रुपये ले आओ।

नाजिम०। अच्छा अहमद यहाँ तुम्हारे पास ठहरता है मैं जाकर रुपये ले आता हूँ।

यह कहकर नाजिम ने अहमद को तो उसी जगह छोड़ा और आप खुशी खुशी क्रूरसिंह की तरफ रुपये लेने को चला।

नाजिम के चले जाने के बाद थोड़ी देर तक केतकी और अहमद इधर उधर की बातें करते रहे। बात करते करते केतकी ने दो चार इलायची बटुए से निकाल कर अहमद को दी और आप भी खाई। अहमद को तेजसिंह के पकड़े जाने की उम्मीद में इतनी खुशी थी कि कुछ सोच न सका और इलायची खा गया, मगर थोड़ी ही देर बाद उसका सर घूमने लगा। तब तो वह समझ गया कि बेशक यह कोई ऐयार (चालाक) है जिसने धोखा दिया। झट कमर से खञ्जर खींच बिना कुछ कहे केतकी को मारा। मगर केतकी पहिले से होशियार थी, दाँव बचाकर उसने अहमद की कलाई पकड़ ली जिससे अहमद कुछ कर न सका बल्कि जरा ही देर बाद बेहोश होकर गिर पड़ा। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बाँध चादर में गठरी कसी और पीठ पर लाद नौगढ़ का रास्ता लिया। खुशी के मारे जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता चला गया, यह भी खयाल था कि कहीं ऐसा न हो कि नाजिम आ जाय और पीछा करे।

इधर नाजिम रुपये लेने के लिए गया तो सीधे क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचा। उस वक्त क्रूरसिंह गहरी नींद में सो रहा था। जाते ही नाजिम ने उसको जगाया। क्रूरसिंह ने पूछा, "क्या है जो इस वक्त आधी रात के समय आकर मुझे उठा रहे हो।"

नाजिम ने क्रूरसिंह से अपनी पूरी कैफियत यानी चन्द्रकान्ता के बाग में जाना और गिरफ्तार होकर कोड़े खाना, अहमद का छूड़ा लाना, फिर वहाँ से रवाना होना,

रास्ते में केतकी से मिलना और हजार रुपये पर तेजसिंह को पकड़वा देने की बातचीत तै करना वगैरह सब खुलासा कह सुनाया। क्रूरसिंह ने नाजिम के पकड़े जाने का हाल सुनकर कुछ अफसोस तो किया मगर पीछे तेजसिंह के गिरफ्तार होने की उम्मीद सुनकर उछल पड़ा और बोला, "लो अभी हजार रुपये देता हूँ, बल्कि मैं खुद तुम्हारे साथ चलता हूँ।" यह कह हजार रुपये सन्दूक में से निकाले और नाजिम के साथ हो लिये।

जब नाजिम क्रूरसिंह को साथ लेकर वहाँ पहुँचा जहाँ अहमद और केतकी को छोड़ गया था तो दोनों में से कोई भी न मिला। नाजिम तो सन्न हो गया और उसके मुँह से झट यह बात निकल पड़ी कि 'धोखा हुआ!'

क्रूरसिंह०। कहो नाजिम, क्या हुआ!

नाजिम०। क्या कहें, वह जरूर केतकी नहीं कोई ऐयार था जिसने पूरा धोखा दिया और अहमद को तो ले ही गया।

क्रूरसिंह०। खूब! तुम तो बाग में चपला के हाथ से पिट ही चुके थे, अहमद बाकी था सो वह भी इस वक्त कहीं जूते खाता होगा, चलो छुट्टी हुई।

नाजिम ने शक मिटाने के लिए थोड़ी देर तक इधर उधर खोज भी की पर कुछ पता न लगा, आखिर रोते पीटते दोनों ने घर का रास्ता लिया।

छठवां बयान

तेजसिंह को विजयगढ़ की तरफ बिदा कर बीरेन्द्रसिंह अपने महल में आए, मगर किसी काम में उनका दिल न लगता था। हरदम चन्द्रकान्ता की याद में सर झुकाए बैठे रहना, जब कभी निराला पाना तो चन्द्रकान्ता की तसवीर अपने सामने रख कर बातें किया करना, या पलंग पर लेट मुँह ढांप खूब रोना, बस यही तो उनका काम था। अगर कोई पूछता तो बातें बना देते। बीरेन्द्रसिंह के बाप सुरेन्द्रसिंह को बीरेन्द्रसिंह का सब हाल मालूम था मगर क्या करते, कुछ बस नहीं चलता था, क्योंकि विजयगढ़ का राजा उनसे बहुत जबर्दस्त था और हमेशा उन पर हुकूमत रखता था।

बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को विजयगढ़ जाती दफे कह दिया था कि तुम आज ही लौट आना। रात बारह बजे तक बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की राह देखी। जब वह न आए इनकी घबड़ाहट और भी ज्यादे हो गई। आखिर किसी तरह अपने को सम्हाला और मसहरी पर लेट दर्वाजे की तरफ देखने लगे। सबेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह

पीठ पर एक गट्ठर लादे आ पहुँचे। पहरे वाले इस हालत में इनको देख हैरान थे मग खौफ से कुछ कह नहीं सकते थे। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह के कमरे में पहुँच कर देख कि अभी तक वे जाग रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह को देखते ही उठ खड़े हुए और बोले "कहो भाई क्या खबर लाये?"

तेजसिंह ने वहाँ का सब हाल सुनाया, चन्द्रकान्ता की चीठी हाथ पर रख दी अहमद की गठरी खोल के दिखा दिया और कहा, "यह चीठी है, और यह सौगात!

बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए। चीठी को कई मर्तबे पढ़ कर आँखों से लगाया फि तेजसिंह से कहा, "सुनो भाई इस अहमद को ऐसी जगह रक्खो जहाँ किसी को मालू न हो, अगर जयसिंह को खबर लगेगी तो फसाद बढ़ जायगा।"

तेजसिंह०। इस बात को मैं पहिले से सोच चुका हूँ। मैं इसको एक पहा की खोह में रख आता हूँ जिसको मैं ही जानता हूँ।

यह कहकर तेजसिंह ने फिर अहमद की गठरी बांधी और एक प्यादे को भेज कर देवीसिंह नामी ऐयार को बुलाया जो तेजसिंह का शागिर्द, दिली दोस्त, और रिश्ते में साला भी लगता था, तथा ऐयारी के फन में भी तेजसिंह से किसी तरह कम न था। जब देवीसिंह आ गए तेजसिंह ने अहमद की गठरी अपनी पीठ पर लाद और देवीसिंह से कहा, "आओ हमारे साथ चलो, तुमसे एक काम है।" देवीसिंह ने कहा, "गुरूजी, यह गठरी मुझको दो मैं ले चलूँ, मेरे रहते यह काम आपको अच्छा नहीं लगता।" आखिर देवीसिंह ने वह गठरी अपनी पीठ पर लाद ली और तेजसिंह के पीछे चल निकले।

ये दोनों शहर के बाहर हो जङ्गल और पहाड़ियों के घूमघुमौवे पेचीले रास्तों से जाते जाते दो कोस के करीब पहुँच कर एक अन्धेरी खोह में घुसे। थोड़ी देर चलने के बाद कुछ रोशनी मिली। वहाँ जाकर तेजसिंह ठहर गए और देवीसिंह से बोले, "गठरी रख दो।"

देवीसिंह०। (गठरी रख कर) गुरूजी, यह तो अजीब जगह है, आज तक मैं कभी इस तरफ नहीं आया और कोई आ भी नहीं सकता, अगर कोई आवे भी तो यहाँ से जाना मुश्किल हो जाय।

तेजसिंह०। सुनो देवीसिंह, इस जगह को मेरे सिवाय कोई नहीं जानता, तुमको अपना दिली दोस्त समझ कर ले आया हूँ, तुम्हें अभी बहुत काम करना होगा।

देवीसिंह०। मैं तुम्हारा ताबेदार हूँ, तुम गुरू हो क्योंकि ऐयारी तुम्हीं ने मुझको सिखाई है, अगर मेरी जान की भी जरूरत पड़े तो मैं देने को तैयार हूँ।

तेजसिंह० । सुनो और मैं जो बातें तुमसे कहता हूँ उसको अच्छी तरह खयाल रक्खो । यह सामने जो पत्थर का दर्वाजा देखते हो इसको खोलना सिवाय मेरे कोई भी नहीं जानता या फिर मेरे ओस्ताद जिन्होंने मुझको ऐयारी सिखाई वे जानते थे। वे तो अब हैं नहीं मर गए, इस समय सिवाय मेरे कोई नहीं जानता और मैं तुमको इसका खोलना बतलाए देता हूँ । जिस जिस को मैं पकड़ कर लाया करूँगा इसी जगह लाकर कैद किया करना जिसमें किसी को मालूम न हो और कोई छुड़ा के भी न ले जा सके । इसके अन्दर कैद करने से कैदियों के हाथ पैर बाँधने की जरूरत नहीं रहेगी, सिर्फ हिफाजत के लिए एक खुलासी बेड़ी उनके पैर में डाल देनी पड़ेगी जिसमें धीरे धीरे चल फिर सकें । कैदियों के खाने पीने की भी फिक्र तुमको नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि इसके अन्दर एक छोटी सी कुदरती नहर है जिसमें बराबर पानी रहता है और मेवों के दरख्त भी बहुत हैं । इस ऐयार को इसी में कैद करते हैं, बाद इसके महाराज से यह बहाना करके कि आजकल मैं बीमार रहता हूँ अगर एक महीने की छुट्टी मिले तो आबोहवा बदल आऊँ, महीने भर की छुट्टी ले लो। मैं कोशिश कर के तुम्हें छुट्टी दिला दूंगा । तब तुम भेष बदल कर विजयगढ़ जाओ और बराबर वहाँ रह कर इधर उधर की खबर लिया करो, जो कुछ हाल हो मुझसे कहा करो, और जब मौका देखो तो बदमाशों को गिरफ्तार करके इसी जगह ला उनको कैद भी कर दिया करो ।

और भी बहुत सी बातें देवीसिंह को समझाने बाद तेजसिंह दर्वाजा खोलने चले । दर्वाजे के ऊपर एक बड़ा सा चेहरा शेर का बना हुआ था जिसके मुंह में हाथ बखूबी जा सकता था । तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, "इस चेहरे के मुंह में हाथ डालकर इसकी जुबान बाहर खींचो।" देवीसिंह ने वैसा ही किया और हाथ भर के करीब जुबान खैंच लिया । उसके खैंचते ही एक आवाज हुई और दर्वाजा खुल गया । अहमद की गठरी लिए हुए दोनों अन्दर गए । देवीसिंह ने देखा कि खूब खुलासी जगह बल्कि कोस भर का साफ मैदान है, चारो तरफ ऊंची ऊंची पहाड़ियाँ जिन पर किसी तरह आदमी चढ़ नहीं सकता, बीच में एक छोटा सा झरना पानी का बह रहा है और बहुत से जङ्गली मेवों के दरख्तों से अजब सोहावनी जगह मालूम होती है । चारो तरफ पहाड़ियाँ नीचे से ऊपर तक छोटे छोटे करजनी गुमची बैर मकोइचे चिरौंजो वगैरह के घने दरख्तों और लताओं से भरी हुई हैं, बड़े बड़े पत्थर के ढोंके मस्त हाथी की तरह दिखाई देते हैं । ऊपर से पानी गिर रहा है जिसकी आवाज बहुत भली मालूम होती है । हवा चलने से पेड़ों की घनघनाहट

और पानी की आवाज, तथा बीच में मोरों का शोर और भी दिल को खींचे लेता है । नीचे जो चश्मा पानी का पश्चिम से पूरब की तरफ घूमता हुआ बह रहा है उसके दोनों तरफ जामुन के पेड़ लगे हुए हैं और पक्के जामुन उस चश्मे के पानी में गिर रहे हैं । पानी भी चश्मे का इतना साफ है कि जमीन दिखाई देती है, कहीं हाथ भर कहीं कमर बराबर कहीं उससे भी ज्यादा होगा। पहाड़ों में कुदरती खोह बने हैं जिनके देखने से मालूम होता है मानों ईश्वर ने यहाँ सैलानियों के रहने के लिए कोठरियाँ बना दी हैं । चारों तरफ की पहाड़ियाँ ढालवीं और बनिस्बत नीचे के ऊपर से ज्यादा खुलासी थीं और उन पर बादल के टुकड़े छोटे छोटे शामियानों का मजा दे रहे थे । यह जगह ऐसी सुहावनी थी कि वर्षों रहने पर भी किसी की तबीयत न घबड़ाए बल्कि खुशी मालूम हो ।

सुबह हो गई. सूरज निकल आया । तेजसिंह ने अहमद की गठरी खोली । उसका ऐयारी का बटुआ और खञ्जर जो कमर में बंधा था ले लिया और एक बेड़ी उसके पैर में डालने बाद होशियार किया । जब अहमद होश में आया और उसने अपने को इस अजब दिलचस्प मैदान में देखा तो यकीन हो गया कि मैं मर गया हूँ और फरिश्ते मुझको यहाँ ले आये हैं । लगा कलमा पढ़ने । तेजसिंह को उसके कलमा पढ़ने पर हंसी आई, बोले, "मियाँ साहब, आप हमारे कैदी हैं, इधर देखिये ?" अहमद ने तेजसिंह की तरफ देखा, पहिचानते ही जान सूख गई, समझ गया कि तब न मरे तो अब मरे । बीबी केतकी की सूरत आँखों के सामने फिर गई, खौफ ने उसका गला ऐसा दबाया कि एक हर्फ भी मुंह से न निकल सका ।

अहमद को उसी मैदान में चश्मे के किनारे छोड़ दोनों ऐयार बाहर निकल आये । तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा, "इस शेर की जुबान जो तुमने बाहर खींच ली है उसी के मुंह में डाल दो ।" देवीसिंह ने वैसा ही किया । जुबान उसके मुंह में डालते ही जोर से दर्वाजा बन्द हो गया और दोनों आदमी उसी पेचीली राह से घर की तरफ रवाना हुए ।

पहर भर दिन चढ़ा होगा जब ये दोनों लौट कर बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे । बीरेन्द्रसिंह ने पूछा, "अहमद को कहाँ कैद करने ले गये थे जो इतनी देर लगी ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "एक पहाड़ी खोह में कैद कर आया हूँ, आज आपको भी वह जगह दिखाऊंगा, पर अब मेरी राय है कि देवीसिंह थोड़े दिन भेष बदल कर विजयगढ़ में रहें । ऐसा करने से मुझको बड़ी मदद मिलेगी ।" इसके बाद वे सब बातें भी बीरेन्द्रसिंह को कह सुनाईं जो खोह में देवीसिंह को समझाई थीं और जो

कुछ राय ठहरी थी वह भी कहा जिसे बीरेन्द्रसिंह ने बहुत पसन्द किया।

स्नान पूजा और मामूली कामों से फुरसत पा दोनों आदमी देवीसिंह को साथ लिए राजदर्बार में गये। देवीसिंह ने छुट्टी के लिये अर्ज किया। राजा देवीसिंह को बहुत चाहते थे, छुट्टी देना मंजूर न था, कहने लगे—"यहाँ ही हम तुम्हारी दवा करावेंगे।" आखिर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की सिफारिश से छुट्टी मिली। दर्बार बर्खास्त होने पर बीरेन्द्रसिंह राजा के साथ महल में चले गये और तेजसिंह अपने पिता जीतसिंह के साथ घर आये, देवीसिंह को भी साथ लाये और सफर की तैयारी करा उसी समय उनको रवाना कर दिया, जाती दफे और भी कई बातें समझा दीं।

दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ बीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गये जहाँ अहमद को कैद किया था। कुमार उस जगह को देख कर बहुत ही खुश हुए और बोले, "भाई इस जगह को देख कर तो मेरे दिल में बहुत सी बातें पैदा होती हैं।" तेजसिंह ने कहा, "पहिले पहिल इस जगह को देख कर मैं तो आपसे भी ज्यादा हैरान हुआ था मगर गुरूजी ने बहुत कुछ हाल यहाँ का समझा कर मेरी दिलजमई कर दी जो किसी दूसरे वक्त आपसे कहूँगा।"

बीरेन्द्रसिंह इस बात को सुन कर और भी हैरान हुए और उस घाटी की कैफियत जानने के लिए जिद्द करने लगे। आखिर तेजसिंह ने वहाँ का हाल जो कुछ अपने गुरू से सुना था कहा जिसे सुन बीरेन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न हुए। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह से क्या कहा, वे इतने खुश क्यों हुए, और वह घाटी कैसी थी यह सब हाल किसी दूसरे मौके पर बयान किया जायगा।

वे दोनों यहाँ से रवाना हो अपने मकान पर आए। कुमार ने कहा, "भाई अब तो मेरा हौसला बहुत बढ़ गया और जी में आता है कि जयसिंह से लड़ जाऊं।" तेजसिंह ने कहा, "आपका हौसला ठीक है मगर जल्दी करने से चन्द्रकान्ता की जान का खौफ है। आप इतना घबड़ाते क्यों हैं, देखिए तो क्या होता है, कल मैं फिर जाऊंगा और मालूम करूंगा कि अहमद के पकड़ जाने से दुश्मनों की क्या कैफियत हुई, फिर दूसरी दफे आपको ले चलूंगा।" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "नहीं अबको मैं जरूर चलूंगा, इस तरह एक दम से डरपोक होकर बैठे रहना मर्दों का काम नहीं।"

तेजसिंह ने कहा, "अच्छा आप भी चलिये, हर्ज क्या है, मगर एक काम होना जरूरी है जो यह कि महाराज से पाँच चार रोज के लिए शिकार की छुट्टी लीजिये और अपनी सरहद पर खेमा डेरा डाल दीजिये, वहां से कुल ढाई कोस चन्द्रकान्ता का महल रह जायगा, तब बहुत तरह का सुभीता होगा।" इस बात को बीरेन्द्रसिंह

ने भी पसन्द किया और आखिर यही राय पक्की ठहरी।

कुछ दिन बाद बीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता राजा सुरेन्द्रसिंह से शिकार के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली और थोड़े से अपने दिली आदमियों को जो खास उन्हीं के खिदमती थे और उनको जान से ज्यादा चाहते थे, साथ ले रवाना हुए। थोड़ा सा दिन बाकी था जब नौगढ़ और विजयगढ़ के सिवाने पर इन लोगों का डेरा पड़ गया। रात भर वहां मुकाम रहा और यह राय ठहरी कि पहिले तेजसिंह विजयगढ़ जाकर हाल चाल ले आवें।

सातवां बयान

अहमद के पकड़े जाने से नाजिम बहुत उदास हो गया और क्रूरसिंह को तो अपनी ही फिक्र पड़ गई कि कहीं तेजसिंह मुझको भी न पकड़ ले जाय। इस खौफ से वह हरदम चौकन्ना रहता था, मगर महाराज जयसिंह के दरबार में रोज जाता और बीरेन्द्रसिंह की तरफ से उनको भड़काया करता।

एक दिन नाजिम ने क्रूरसिंह को यह सलाह दी कि जिस तरह हो सके अपने बाप कुपथसिंह को मार डालो, उसके मरने के बाद जयसिंह जरूर तुमको मन्त्री (वजीर) बनायेंगे, उस वक्त तुम्हारी हुकूमत हो जाने से सब काम बहुत जल्द होगा। आखिर क्रूरसिंह ने जहर दिलवा कर अपने बाप को मरवा डाला। महाराज ने कुपथसिंह के मरने पर अफसोस किया और कई दिन दर्बार में न आये, शहर में भी कुपथसिंह मन्त्री के मरने का गम छा गया।

क्रूरसिंह ने जाहिर में अपने बाप के मरने का बड़ा भारी मातम (गम) किया और बारह रोज के वास्ते अलग बिस्तरा जमाया। दिन भर तो अपने बाप को रोता पर रात को नाजिम के साथ बैठ कर चन्द्रकान्ता के मिलने तथा तेजसिंह और बीरेन्द्रसिंह को गिरफ्तार करने की फिक्र करता। इन्हीं दिनों बीरेन्द्रसिंह ने भी शिकार के बहाने विजयगढ़ की सरहद पर खेमा डाल दिया था, जिसकी खबर नाजिम ने क्रूरसिंह को पहुँचाई और कहा— 'बीरेन्द्रसिंह जरूर चन्द्रकान्ता की फिक्र में आया है। अफसोस इस समय अहमद न हुआ नहीं तो बड़ा काम निकलता, खैर देखा जायगा।" यह कह क्रूरसिंह से बिदा हो बालादवी* के वास्ते चला गया।

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो विजयगढ़ पहुँचे और मंत्री के मरने तथा शहर भर में गम छाने का हाल लेकर बीरेन्द्रसिंह के पास लौट आये, यह भी खबर लाये

* बालादवी—टोह लेने के लिये गश्त करना।

कि दो रोज में सूतक निकल जाने पर महाराज जयसिंह क्रूर को अपना दीवान बनावेंगे।

बीरेन्द्रसिंह०। देखो क्रूर ने चन्द्रकान्ता के लिए बाप को मार डाला! अगर राजा को भी मार डाले तो ऐसे आदमी का क्या ठिकाना है।

तेजसिंह०। सच है, वह नालायक जहाँ तक होगा राजा पर भी बहुत जल्द हाथ फेरेगा, अस्तु अब मैं भी दो तीन दिन चन्द्रकान्ता के महल में न जाकर दर्बार ही का हालचाल लूँगा, हाँ इस बीच में अगर मौका मिल जायगा तो देखा जायगा।

बीरेन्द्रसिंह०। सो सब कुछ नहीं, चाहे जो हो आज मैं चन्द्रकान्ता से जरूर मुलाकात करूँगा।

तेजसिंह०। आप जल्दी न करें, जल्दी ही सब कामों को बिगाड़ती है।

बीरेन्द्र०। जो भी हो, मैं तो जरूर जाऊँगा!

तेजसिंह ने बहुत समझाया मगर चन्द्रकान्ता की जुदाई में उनको भला बुरा क्या सूझता था, एक न माना और चलने को तैयार ही हो गये। आखिर तेजसिंह ने कहा, "खैर तो चलिए, जब आपकी ऐसी ही मर्जी है तो हम क्या करें, जो कुछ होगा देखा जायगा!"

शाम के वक्त ये दोनों टहलने के लिए खेमे से बाहर निकले और अपने प्यादों से कह गये कि अगर हमलोगों के आने में देर हो तो घबराना मत। टहलते हुए दोनों विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए।

कुछ रात गई होगी जब चन्द्रकान्ता के उसी नजरबाग के पास पहुँचे जिसका हाल पहिले लिख चुके हैं।

रात अँधेरी थी इसीलिए इन दोनों को बाग में जाने के लिए कोई तरद्दुद न करना पड़ा, पहरे वालों को बचा कर कमन्द फेंका और उसके जरिये बाग के अन्दर जा दोनों एक घने पेड़ के नीचे खड़े हो इधर उधर निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

बाग के बीचोबीच संगमरमर के साफ़ चिकने चबूतरे पर मोमी शमादान जल रहा था जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी बातें कर रही थीं। चपला बातें भी करती जाती थी और इधर उधर तेजी के साथ निगाह भी दौड़ा रही थी।

चन्द्रकान्ता को देखते ही बीरेन्द्रसिंह का अजब हाल हो गया बदन में कँपकँपी होने लगी, यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर पड़े। मगर बीरेन्द्रसिंह की यह हालत देख तेजसिंह को कोई तरद्दुद न हुआ, झट अपने ऐयारी के बटुए से लखलखा निकाल सुंघा दिया और होश में लाकर कहा, "देखिए, दूसरे के मकान में आपको इस तरह बेसुध न होना चाहिए। अब आप अपने को सम्हालिए और इसी जगह ठहरिए, मैं

जाकर बातें कर आऊँ तब आपको ले चलूँ।" यह कह उन्हें उसी पेड़ के नीचे छोड़ उस जगह गए जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी थी। तेजसिंह को देखते ही चन्द्रकान्ता बोली, "क्यों जी, इतने दिन कहाँ रहे? क्या इसी का नाम मुरौवत है? अबकी भी आए तो अकेले ही आए! वाह, ऐसा ही था तो हाथ में चूड़ी पहन लेते, जवांमर्दी की डींग क्यों मारते हैं? जब उनकी मुहब्बत का यही हाल है तो जी कर क्या करूँगी?" कह कर चन्द्रकान्ता रोने लगी, यहाँ तक कि हिचकी बँध गई। तेजसिंह उसकी यह हालत देख बहुत घबड़ाये और बोले, "बस इसी को नादानी कहते हैं? अच्छी तरह हाल भी न पूछा और लगीं रोने, ऐसा ही है तो लो मैं अभी उनको ले आता हूँ!"

यह कह कर तेजसिंह वहाँ गए जहाँ बीरेन्द्रसिंह को छोड़ा था और उनको अपने साथ ले चन्द्रकान्ता के पास लौटे। चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह के मिलने से बड़ी खुशी हुई, दोनों मिलकर खूब रोए यहाँ तक कि बेहोश हो गए मगर थोड़ी देर बाद होश में आ गए और आपस में शिकायत मिली मुहब्बत की बातें करने लगे।

अब जमाने का उलट फेर देखिए। घूमता फिरता टोह लगाता नाजिम भी उसी जगह आ पहुँचा और दूर से इन सभों की खुशी भरी मजलिस देख कर जल मरा। तुरत ही लौट कर क्रूरसिंह के पास पहुँचा। क्रूरसिंह ने नाजिम को घबड़ाया हुआ देखा और पूछा, "क्यों क्या है जो तुम इतना घबड़ाए हुए हो?"

नाजिम०। है क्या, जो मैं सोचता था वही हुआ! यही वक्त चालाकी का है, अगर अब भी कुछ बन न पड़ा तो बस तुम्हारी किस्मत फूट गई ऐसा ही समझना पड़ेगा।

क्रूरसिंह०। तुम्हारी बातें तो कुछ समझ में नहीं आतीं, खुलासा कहो क्या बात है?

नाजिम०। खुलासा बस यही है कि बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता के पास पहुँच गया और इस समय बाग में हँसी खुशी के चहचहे उड़ रहे हैं।

यह सुनते ही क्रूरसिंह की आँखों के आगे अँधेरा सा छा गया, दुनिया उदास मालूम होने लगी, कहाँ तो बाप के जाहिरी गम में वह सर मुड़ाए बरसाती मेढ़क बना बैठा था, तेरह रोज कहीं बाहर जाना हो ही नहीं सकता था, मगर इस खबर ने उसको अपने आपे में न रहने दिया, फौरन उठ खड़ा हुआ और उसी तरह नंग धड़ंग औंधी हाँड़ी सा सर लिए महाराज जयसिंह के पास पहुँचा। जयसिंह क्रूरसिंह को इस तरह आते देख हैरान हो बोले, "क्रूरसिंह, सूतक और बाप का गम छोड़ कर

तुम्हारा इस तरह आना मुझको हैरानी में डाल रहा है !"

क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज हमारे बाप तो आप हैं, उन्होंने तो पैदा किया, परवरिश आप ही की बदौलत होती है। जब आपही की इज्जत में बट्टा लगा तो मेरी जिन्दगी किस काम की है और मैं किस लायक गिना जाऊँगा।"

जयसिंह०। (गुस्से में आकर) क्रूरसिंह, ऐसा कौन है जो हमारी इज्जत बिगाड़े?

क्रूरसिंह०। एक अदना आदमी।

जयसिंह०। (दांत पीस कर) जल्दी बताओ वह कौन है जिसके सर पर मौत सवार हुई है !!

क्रूरसिंह०। बीरेन्द्रसिंह !

जयसिंह०। उसकी क्या मजाल जो मेरा मुकाबला करे, इज्जत बिगाड़ना तो दूसरी चीज है ! मुझे तुम्हारी बात कुछ समझ में नहीं आती, साफ साफ जल्द बताओ क्या बात है ? बीरेन्द्रसिंह कहाँ है ?

क्रू०। आपके चोर महल के बाग में !

यह सुनते ही महाराज का बदन मारे गुस्से के काँपने लगा। तड़प कर हुक्म दिया, "अभी जाकर बाग को घेर लो, मैं कोट की राह वहाँ जाता हूँ।"

आठवां बयान

बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता से मीठी मीठी बातें कर रहे हैं, चपला से तेजसिंह उलझ रहे हैं, चम्पा बेचारी इन लोगों का मुंह ताक रही है। अचानक एक काला कलूटा आदमी, सिर से पैर तक आबनूस का कुन्दा, लाल लाल आँखें, लंगोटा कसे, उछलता कूदता इन सभों के बीच में आ खड़ा हुआ। पहले तो ऊपर नीचे के दाँत खोल तेजसिंह की तरफ दिखाया, तब बोला—"खबर भई राजा को तुमरी सुनो गुरूजी मेरे।" इसके बाद उछलता कूदता चला गया। जाती दफे चम्पा की टांग पकड़ थोड़ी दूर घसीटता ले गया, आखिर छोड़ दिया। यह देख सब हैरान हो गये और डरे कि यह पिशाच कहाँ से आ गया, चम्पा बेचारी तो चिल्ला उठी, मगर तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़ के बोले, "चलो जल्दी उठो, अब बैठने का मौका नहीं !" चन्द्रकान्ता की तरफ देख कर बोले, "हम लोगों के जल्दी चले जाने का रंज तुम मत करना और जब तक महाराज यहाँ न आयें इसी तरह सबकी सब बैठी रहना।"

चन्द्रकान्ता०। इतनी जल्दी करने का सबब क्या है और यह कौन था जिसकी बात सुन कर भागना पड़ा ?

तेज०। (जल्दी से) अब बात करने का मौका नहीं रहा।

यह कह कर बीरेन्द्रसिंह को जबर्दस्ती उठाया और साथ ले कमन्द के जरिये बाग के बाहर हो गये।

चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह का इस तरह चला जाना बहुत बुरा मालूम हुआ। आँखों में आँसू भर चपला से बोली, "यह क्या तमाशा हो गया कुछ समझ में नहीं आता। उस पिशाच को देख कर मैं कैसी डरी, मेरे कलेजे पर हाथ रख कर देखो अभी तक धड़धड़ा रहा है ! तुमने क्या खयाल किया ?"

चपला ने कहा, "कुछ ठीक समझ में नहीं आता, हाँ इतना जरूर है कि इस समय बीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने की खबर महाराज को हो गई, वे जरूर आते होंगे।" चम्पा बोली, "न मालूम मुए को मुझसे क्या दुश्मनी थी !"

चम्पा की बात पर चपला को हँसी आ गई मगर हैरान थी कि यह क्या खेल हो गया। थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब भरी बातें होती रहीं, इतने में ही बाग के चारो तरफ आदमियों के शोरगुल की आवाज आने लगी। चपला ने कहा, "रङ्ग बुरे नजर आने लगे, मालूम होता है कि इस बाग को सिपाहियों ने घेर लिया।' बात पूरी भी न होने पाई थी कि सामने से महाराज आते दिखाई पड़े।

देखते ही सब की सब उठ खड़ी हुईं। चन्द्रकान्ता ने बढ़ कर पिता के आगे सिर झुकाया और कहा, "इस समय आपके यकायक आने...!" इतना कहकर चुप हो रही। जयसिंह ने कहा, "कुछ नहीं, तुम्हारे देखने को जी चाहा इसी से चले आये। अब तुम भी महल में जाओ, यहाँ क्यों बैठी हो, ओस पड़ती है, तबीयत तुम्हारी खराब हो जायगी।" यह कह कर महल की तरफ रवाना हुए।

चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा भी महाराज के पीछे पीछे महल में गईं। जयसिंह अपने कमरे में आए और जी में बहुत शरमिन्दा होकर कहने लगे, "देखो हमारी भोली भाली लड़की को क्रूर झूठमूठ बदनाम करता है ! न मालूम इस नालायक के जी में क्या समाई है, बेधड़क उस बेचारी को ऐब लगा दिया। अगर लड़की सुनेगी तो क्या कहेगी ? ऐसे शैतान का तो मुंह न देखना चाहिए बल्कि सजा देना चाहिये, जिसमें फिर ऐसा कमीनापन न करे।" यह सोच हरीसिंह नामी एक चोबदार को हुक्म दिया कि बहुत जल्द क्रूर को हाजिर करे।

हरीसिंह क्रूरसिंह को खोजता और पता लगाता हुआ बाग के पास पहुँचा जहाँ वह बहुत से आदमियों के साथ खुशी खुशी बाग को घेरे हुए था। हरीसिंह ने कहा,

"चलिए महाराज ने बुलाया है।" क्रूरसिंह घबड़ा उठा कि महाराज ने क्यों बुलाया, क्या चोर नहीं मिला ? महाराज तो मेरे सामने महल में चले गए थे ! हरीसिंह से पूछा, "महाराज क्या कर रहे हैं ?" उसने कहा, "अभी महल में आए हैं गुस्से में भरे बैठे हैं आपको जल्दी बुलाया है।" यह सुनते ही क्रूरसिंह की नानी मर गई, डरता कांपता हरीसिंह के साथ महाराज के पास पहुँचा।

महाराज ने क्रूर को देखते ही कहा, "क्यों बे क्रूर ! बेचारी चन्द्रकान्ता को इस तरह झूठ मूठ बदनाम करना और हमारी इज्जत में बट्टा लगाना यही तेरा काम है ! यह इतने आदमी जो बाग को घेरे हुए हैं अपने जी में क्या कहते होंगे ? नालायक, गदहा, पाजी ! तैंने कैसे कहा कि महल में बीरेन्द्र है !!"

मारे गुस्से के महाराज जयसिंह के होठ काँप रहे थे, आँखें लाल हो रही थीं। कैफियत देख कर क्रूरसिंह की तो जान सूख गई, घबड़ा के बोला, "मुझको तो यह नाजिम ने खबर पहुँचाई थी जो आज कल महल के पहरे पर मुकर्रर है।" यह सुनते ही महाराज ने हुक्म दिया, "बुलाओ नाजिम को !" थोड़ी देर में नाजिम भी हाजिर किया गया। गुस्से में भरे हुए महाराज के मुँह से साफ आवाज नहीं निकलती थी। टूटे फूटे शब्दों में नाजिम से पूछा, "क्यों बे, तैंने कैसी खबर पहुँचाई ?" उस वक्त डर के मारे उसकी क्या हालत थी वही जानता होगा, जान से नाउम्मीद हो चुका था, डरता हुआ बोला, "मैंने तो आँखों से देखा था हुजूर, शायद किसी तरह भाग गया हो।"

अब जयसिंह से गुस्सा बर्दाश्त न हो सका, हुक्म दिया, "पचास कोड़े क्रूर को और दो सौ कोड़े नाजिम को लगाए जायं ! बस इतने ही पर छोड़े देता हूँ, आगे फिर कभी ऐसा होगा तो सिर उतार लिया जायगा ! क्रूर, तू वजीर होने लायक नहीं है।"

अब क्या था, लगे दोतर्फी कोड़े पड़ने। उन लोगों के चिल्लाने से महल गूंज उठा मगर महाराज का गुस्सा न गया। जब दोनों पर कोड़े पड़ चुके, उनको महल के बाहर निकलवा दिया और महाराज आराम करने चले गए मगर मारे गुस्से के रात भर नींद न आई।

क्रूरसिंह और नाजिम दोनों घर आए और एक जगह बैठ कर लगे झगड़ने। क्रूर नाजिम से कहने लगा—"तेरी बदौलत आज मेरी इज्जत मिट्टी में मिल गई ! कल दीवान होंगे यह यह उम्मीद भी न रही, मार खाई उसकी तकलीफ मैं ही जानता हूँ, यह सब तेरी ही बदौलत हुआ !!" नाजिम कहता था—"मैं तुम्हारी

बदौलत मारा गया, नहीं तो मुझको क्या काम था ? जहन्नुम में जाती चन्द्रकान्ता और बीरेन्द्र, मुझे क्या पड़ी थी जो जूते खाता !" ये दोनों आपस में यों ही पहरों झगड़ते रहे।

अन्त में क्रूरसिंह ने कहा, "हम तुम दोनों को लानत है अगर इतनी सजा पाने पर भी बीरेन्द्र को गिरफ्तार न किया !"

नाजिम ने कहा, "इसमें तो कोई शक नहीं कि बीरेन्द्र अब रोज महल में आया करेगा क्योंकि इसी वास्ते वह अपना डेरा सरहद पर ले आया है, मगर अब कोई काम करने का हौसला नहीं पड़ता, कहीं फिर मैं देखूँ और खबर करने पर वह दुबारा निकल जाय तो अबकी जरूर ही जान से मारा जाऊंगा।"

क्रूरसिंह ने कहा, "तब तो कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिए जिसमें जान भी बचे और बीरेन्द्रसिंह को अपनी आँखों से महाराज जयसिंह महल में देख भी लें।

बहुत देर सोचने के बाद नाजिम ने कहा, "चुनारगढ़ के महाराज शिवदत्तसिंह के दर्बार में एक पण्डित जगन्नाथ नामी ज्योतिषी हैं जो रमल भी बहुत अच्छा जानते हैं। उनके रमल फेंकने में इतनी तेजी है कि जब चाहो पूछ लो कि फलाना आदमी इस समय कहाँ है क्या कर रहा है या कैसे पकड़ा जायगा ? वह फौरन बतला देते हैं। उनको अगर मिलाया जाय और वे यहाँ आकर और कुछ दिन रह कर तुम्हारी मदद करें तो सब काम ठीक हो जाय। चुनारगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है, कुल तेईस कोस है, चलो हम तुम चलें और जिस तरह बन पड़े उन्हें ले आवें।"

आखिर क्रूरसिंह बहुत कुछ जवाहिरात अपने कमर में बाँध दो तेज घोड़े मंगवा नाजिम के साथ सवार हो उसी समय चुनार* की तरफ रवाना हो गया और घर में सबसे कह गया कि अगर महाराज के यहाँ से कोई आवे तो कह देना कि बहुत बीमार हैं।

नौवां बयान

बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह बाग से बाहर हो अपने खेमे की तरफ रवाना हुए। जब खेमे में पहुँचे तो आधी रात बीत चुकी थी मगर तेजसिंह को कब चैन पड़ता था, बीरेन्द्रसिंह को पहुँचा कर फिर लौटे और अहमद की सूरत बन क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचे। क्रूरसिंह चुनार की तरफ रवाना हो चुका था, जिस आदमी

* इसका पुराना नाम चर्णाद्रि है।

को घर में हिफाजत के लिए छोड़ गया था और कह गया था कि अगर महाराज पूछें तो कह देना बीमार हैं उन लोगों ने यकायक अहमद को देखा तो ताज्जुब से पूछा, "कहो अहमद, तुम कहाँ थे अब तक ?" नकली अहमद ने कहा, "मैं जहन्नुम की सैर करने गया था, अब लौट कर आया हूँ—यह बताओ कि क्रूरसिंह कहाँ हैं?" सभों ने उसका पूरा पूरा हाल कह सुनाया और कहा, "अब चुनार गये हैं, तुम भी वहीं जाते तो अच्छा होता !"

अहमद ने कहा, "हाँ मैं भी जाता हूँ, अब घर न जाऊंगा सीधे चुनार ही पहुँचता हूँ।" यह कह वहाँ से रवाना हो अपने खेमे में आये और बीरेन्द्रसिंह से सब हाल कहा। बाकी रात आराम किया, सबेरा होते ही नहा धो, कुछ भोजन कर, सूरत बदल, विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। नंगे सिर, हाथ पैर और मुंह पर धूल डाले, रोते पीटते महाराज जयसिंह के दर्बार में पहुँचे। इनकी हालत देख कर सब हैरान हो गये। महाराज ने मुन्शी से कहा, "पूछो कौन है और क्या कहता है ?"

तेजसिंह ने कहा—"हुजूर मैं क्रूरसिंह का नौकर हूँ, मेरा नाम रामलाल है। महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है। मैंने मना किया कि महाराज का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिए, जिस पर मुझको खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था सब छीन लिया। हाय रे, मैं बिल्कुल लुट गया, एक कौड़ी भी नहीं रही, अब मैं क्या खाऊंगा, घर कैसे पहुँचूंगा, लड़के बाले तीन बरस की कमाई खोजेंगे, कहेंगे कि रजवाड़े की कमाई क्या लाए हो ? उनको क्या दूँगा ! दोहाई महाराज की, दोहाई दोहाई दोहाई !!"

बड़ी मुश्किल से सभों ने चुप कराया। महाराज को बड़ा गुस्सा आया, हुक्म दिया, "देखो क्रूरसिंह कहाँ है ?" चोबदार खबर लाया—"बहुत बीमार हैं, उठ नहीं सकते।" रामलाल (तेजसिंह) बोला, "दोहाई महाराज की ! यह भी उन्हीं की तरफ मिल गया, झूठ बोलता है। मुसलमान सब उसके दोस्त हैं, दोहाई महाराज की, खूब तहकीकात की जाय !" महाराज ने मुन्शी से कहा, "तुम जाकर पता लगाओ कि क्या मामला है ?" थोड़ी देर बाद मुन्शी वापस आये और बोले, "महाराज, क्रूरसिंह घर में तो नहीं है, और घर वाले कुछ बताते नहीं कि कहाँ गये हैं।" महाराज ने कहा, "जरूर चुनारगढ़ गया होगा ! अच्छा उसके यहाँ के किसी प्यादे को बुलाओ।" हुक्म पाते ही चोबदार गया और एक बदकिस्मत प्यादे को पकड़ लाया। महाराज ने पूछा, "क्रूरसिंह कहाँ गया है ?" प्यादे ने ठीक पता नहीं दिया। रामलाल ने फिर कहा, "दोहाई महाराज की। बिना मार खाये न बतायेगा !!" महाराज ने मारने

का हुक्म दिया। पिटने के पहले ही उस बदनसीब ने बतला दिया कि चुनार गए हैं।

महाराज जयसिंह को क्रूर का हाल सुन कर जितना गुस्सा आया बयान से बाहर है। हुक्म दिया—

(१) क्रूरसिंह के घर के सब औरत मर्द घण्टे भर के अन्दर जान बचा के हमारी सरहद के बाहर चले जायं।

(२) उसका मकान लूट लिया जाय।

(३) उसकी दौलत में से जितना रुपया अकेला रामलाल उठा ले जा सके ले जाय, बाकी सरकारी खजाने में दाखिल किया जाय।

(४) रामलाल अगर नौकरी कबूल करे तो दी जाय।

हुक्म पाते ही सबसे पहले रामलाल क्रूरसिंह के घर पहुँचा। महाराज के मुन्शी को जो हुक्म की तामील करने गया था रामलाल ने कहा, "पहिले मुझको रुपए दे दो कि उठा ले जाऊं और महाराज को आशीर्वाद करूं। बस जल्दी दो, मुझ गरीब को मत सताओ !!" मुन्शी ने कहा "अजब आदमी है, इसको अपनी ही पड़ी है ! ठहर जा, जल्दी क्यों करता है !" नकली रामलाल ने चिल्ला कर कहना शुरू किया, "दुहाई महाराज की, मेरे रुपए मुन्शी नहीं देता !" कहता हुआ महाराज की तरफ चला। मुन्शी ने कहा, "लो लो, जाते कहाँ हो, भाई पहिले इसको दे दो !!"

रामलाल ने कहा, "हत्तेरे की, मैं चिल्लाता नहीं तो सभी रुपए डकार जाता!" इस पर सब हंस पड़े। मुन्शी ने दो हजार रुपए आगे रखवा दिए और कहा, "ले ले जा !" रामलाल ने कहा, "वाह, कुछ याद है महाराज ने क्या हुक्म दिया है ? इतना तो मेरे जेब में आ जायगा, मैं उठा के क्या ले जाऊंगा ?" मुन्शी झुंझला उठा, नकली रामलाल को खजाने के सन्दूक के पास ले जा कर खड़ा कर दिया और कहा, "उठा देखें कितना उठाता है !" देखते देखते उसने दस हजार रुपए उठा लिए, सिर पर, बटुए में कमर में, जेब में, यहाँ तक कि मुंह में भी कुछ रुपए भर लिए और रास्ता लिया। सब हंसने और कहने लगे, "आदमी नहीं इसे राक्षस समझना चाहिए !"

महाराज के हुक्म की तामील हो गई, घर लूट लिया गया, औरत मर्द सभों ने रोते पीटते चुनार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह रुपया लिए हुए बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे और बोले, "आज तो मुनाफा कर लाए, मगर यार माल शैतान का है, इसमें कुछ आप भी मिला दीजिए जिसमें पाक हो जाय !" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "यह तो बताओ कि लाए कहाँ से ?" उन्होंने

सब हाल कहा। बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "जो कुछ मेरे पास यहाँ है मैंने सब दिया !" तेजसिंह ने कहा, "मगर शर्त यह कि इससे कम न हो, क्योंकि आपका रुतबा उससे कहीं ज्यादे है।" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "तो इस वक्त कहाँ से लावें ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "तमस्सुक लिख दो !" कुमार हंस पड़े और उंगली से हीरे की अंगूठी उतार के दे दी। तेजसिंह ने खुश हो कर ले ली और कहा, "परमेश्वर आपकी मुराद पूरी करे। अब हम लोगों को भी यहाँ से अपने घर चले चलना चाहिए क्योंकि अब मैं चुनार जाऊंगा, देखूं शैतान का बच्चा वहाँ क्या बन्दोबस्त कर रहा है।"

दसवां बयान

क्रूरसिंह की तबाही का हाल शहर भर में फैल गया। महारानी रत्नगर्भा (चन्द्रकान्ता की मां) और चन्द्रकान्ता इन सभों ने भी सुना। कुमारी और चपला को बड़ी खुशी हुई। जब महाराज महल में गए हँसी हँसी में महारानी ने क्रूरसिंह का हाल पूछा। महाराज ने कहा, "वह बड़ा बदमाश तथा झूठा था, मुफ्त में लड़की को बदनाम करता था !"

महारानी ने बात छेड़ कर कहा, "आपने क्या सोच कर बीरेन्द्र का आना जाना बन्द कर दिया ! देखिए यह वही बीरेन्द्र है जो लड़कपन से, जब चन्द्रकान्ता पैदा भी नहीं हुई थी, यहाँ आता और कई कई दिनों तक रहा करता था। जब यह पैदा हुई तो दोनों बराबर खेला करते और इसी सबब से इन दोनों की आपस में मुहब्बत भी बढ़ गई। उस वक्त यह भी नहीं मालूम होता था कि आप और राजा सुरेन्द्रसिंह कोई दो हैं या नौगढ़ और विजयगढ़ दो रजवाड़े हैं। सुरेन्द्रसिंह भी बराबर आप ही के कहे मुताबिक चला करते थे। कई दफे आप कह भी चुके थे कि चन्द्रकान्ता की शादी बीरेन्द्र के साथ कर देनी चाहिए। ऐसे मेल मुहब्बत और आपस के बनाव को उस दुष्ट क्रूर ने बिगाड़ दिया और दोनों के चित्त में मैल पैदा कर दिया !!"

महाराज ने कहा, "मैं आप हैरान हूँ कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया था। मेरी समझ पर पत्थर पड़ गये। कौन सी बात ऐसी हुई जिसके सबब मेरे दिल से बीरेन्द्रसिंह की मुहब्बत जाती रही। हाय, इस क्रूर ने तो गजब ही किया। इसके निकल जाने पर अब मुझे मालूम होता है !" महारानी ने कहा, "देखें अब वह चुनार में जाकर क्या करता है? जरूर महाराज शिवदत्त को उभाड़ेगा और कोई नया बखेड़ा पैदा करेगा।" महाराज ने कहा, "खैर देखा जायगा, परमेश्वर मालिक है, उस नालायक

ने तो अपने भरसक बुराई में कुछ भी कमी नहीं की।"

यह कह कर महाराज महल के बाहर चले गये। अब उनको यह फिक्र हुई कि किसी को दीवान बनाना चाहिये नहीं तो काम न चलेगा। कई दिन तक सोच विचार कर हरदयालसिंह नामी नायब दीवान को मन्त्री की पदवी और खिलअत दी। यह शख्स बड़ा ईमानदार नेकबख्त रहमदिल और साफ तबीयत का था, कभी किसी का दिल इसने नहीं दुखाया।

ग्यारहवां बयान

क्रूरसिंह को बस एक यही फिक्र लगी हुई थी कि जिस तरह बने बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को मार डालना चाहिए बल्कि नौगढ़ का राज्य ही गारत कर देना चाहिए। नाजिम् को साथ लिए हुए चुनार पहुँचा और महाराज शिवदत्तसिंह के दर्बार में जाहिर होकर नजर दिया। महाराज इसे बखूबी जानते थे इसलिए नजर लेकर हाल पूछा। क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज, जो कुछ हाल है मैं एकान्त में कहूँगा।"

दर्बार बर्खास्त हुआ, शाम को तखलिए (एकान्त) में महाराज ने क्रूर को बुलाया हाल पूछा। उसने जितनी शिकायत महाराज जयसिंह की करते बनी की और यह भी कहा कि—'लश्कर का इन्तजाम आजकल बहुत खराब है, मुसलमान सब हमारे मेल में हैं, अगर आप चाहें तो इस समय विजयगढ़ को फतह कर लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। चन्द्रकान्ता महाराज जयसिंह की लड़की भी जो खूबसूरती में अपना सानी नहीं रखती आप ही के हाथ लगेगी।'

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें कर उसने महाराज शिवदत्त को पूरे तौर से भड़काया। आखिर महाराज ने कहा, "हमको लड़ने की अभी कोई जरूरत नहीं, पहले हम अपने ऐयारों से काम लेंगे फिर जैसा होगा देखा जायगा। मेरे यहाँ छः ऐयार हैं जिसमें से चार ऐयारों के साथ पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को तुम्हारे साथ कर देते हैं। इन सभों को लेकर तुम जाओ देखो तो ये लोग क्या खेल करते हैं, पीछे जब मौका होगा हम भी लश्कर लेकर पहुँच जायँगे।"

उन ऐयारों के नाम ये थे—पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल, चुन्नीलाल, रामनारायण, भगवानदत्त और घसीटासिंह। महाराज ने पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल रामनारायण और भगवानदत्त, इन चारों को जो मुनासिब था कहा और इन लोगों को क्रूरसिंह के हवाले किया।

अभी ये लोग बैठे ही थे कि एक चोबदार ने आकर अर्ज किया, "महाराज, ड्योढ़ी पर कई आदमी फरियादी खड़े हैं कि हम लोग क्रूरसिंह के रिश्तेदार हैं, इनके चुनार जाने का हाल सुन कर महाराज जयसिंह ने घर बार लूट लिया और हम लोगों को निकाल दिया। उन लोगों के लिये क्या हुक्म होता है ?"

यह सुन क्रूरसिंह के तो होश उड़ गये। महाराज शिवदत्त ने सभों को अन्दर बुलाया और हाल पूछा। जो कुछ हुआ था उन्होंने बयान किया, इसके बाद क्रूरसिंह और नाजिम की तरफ देखकर कहा, "अहमद भी तो आपके पास आया है !" नाजिम ने पूछा, "अहमद! वह कहाँ है ? यहाँ तो नहीं आया !" सभों ने कहा, "वाह, वहाँ तो घर पर गया था और यह कह कर चला आया कि मैं भी चुनार जाता हूँ।"

नाजिम ने कहा, "बस बस, मैं समझ गया, वह जरूर तेजसिंह होगा इसमें कोई शक नहीं। उसी ने महाराज को भी खबर पहुँचाई होगी। यह सब फसाद उसी का है।" यह सब सुन क्रूरसिंह रोने लगा। महाराज शिवदत्त ने कहा, "जो होना था सो हो गया, सोच मत करो। देखो इसका बदला जयसिंह से मैं लेता हूँ। तुम इसी शहर में रहो, हमाम के सामने वाला मकान तुम्हें दिया जाता है, उसी में अपने कुटुम्ब को रक्खो, रुपये की मदद सर्कार से हो जायगी।" क्रूरसिंह ने महाराज के हुक्म मुताबिक उसी मकान में डेरा जमाया।

कई दिन बाद दर्बार में हाजिर होकर क्रूरसिंह ने महाराज से विजयगढ़ जाने के लिए अर्ज किया। सब इन्तजाम हो ही चुका था, महाराज ने मय चारों ऐयारों और पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी के क्रूर और नाजिम को बिदा किया। ऐयार लोग भी अपने अपने सामान से लैस हो गए। कई तरह के कपड़े लिए, बटुआ ऐयारी का अपने अपने कंधे से लटका लिया, खञ्जर बगल में लिया। ज्योतिषीजी ने भी पोथी पत्रा पटड़ी और कुछ ऐयारी का सामान ले लिया क्योंकि यह थोड़ी बहुत ऐयारी भी जानते थे। अब यह शैतानों का झुण्ड विजयगढ़ की तरफ रवाना हुआ। इनलोगों का इरादा नौगढ़ जाने का भी था। देखिए कहाँ जाते हैं और क्या करते हैं।

बारहवां बयान

बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह नौगढ़ के किले से बाहर निकल बहुत से आदमियों को साथ लिए चन्द्रप्रभा नदी के किनारे बैठे शोभा देख रहे हैं। एक तरफ से चन्द्रप्रभा दूसरी तरफ से करमनासा नदी बहती हुई आई है और किले के नीचे दोनों का संगम हो गया है। जहाँ कुमार और तेजसिंह बैठे हैं नदी बहुत चौड़ी है और उस पार

साखू का बड़ा भारी घना जङ्गल है जिसमें हजारों मोर तथा लंगूर अपनी अपनी बोलियों और किलकारियों से जङ्गल की शोभा बढ़ा रहे हैं। कुँवर बीरेन्द्रसिंह उदास बैठे हैं, चन्द्रकान्ता के विरह में मोरों की आवाज तीर सी लगती है, लंगूरों की किलकारी वज्र सी मालूम होती है, शाम की धीमी धीमी ठंडी हवा लू का काम करती है। चुपचाप बैठे नदी की तरफ देख उसांसें ले रहे हैं।

इतने में एक साधू रामरज से रंगी हुई कफनी पहरे, रामानन्दी तिलक लगाए, हाथ में खञ्जरी लिए, कुछ दूर नदी के किनारे बैठा यह गाता हुआ दिखाई पड़ा :—

"गए चुनार क्रूर बहुरङ्गी लाए चार चितारी*।
संग में उनके पण्डित देवता, जो हैं सगुन विचारी।
इनसे रहना बहुत सम्हल के, रमल चले अति कारी।
क्या बैठे हौ तुम बेफिकरे, काम करो कोई भारी॥"

यह आवाज कान में पड़ते ही तेजसिंह ने गौर के साथ उस तरफ देखा। वह साधू भी इन्हीं की तरफ मुँह करके गा रहा था। तेजसिंह को अपनी तरफ देखते देख दांत निकाल कर दिखला दिया और उठ के चलता बना।

बीरेन्द्रसिंह अपनी चन्द्रकान्ता के ध्यान में डूबे हैं, उनको इन सब बातों की कोई खबर नहीं। वे नहीं जानते कि कौन गा रहा है या किधर से आवाज आ रही है। एकटक नदी की तरफ देख रहे हैं। तेजसिंह ने बाजू पकड़ कर हिलाया, कुमार चौंक पड़े। तेजसिंह ने धीरे से पूछा "कुछ सुना ?" कुमार ने कहा, "क्या ? नहीं तो, कहो ?" तेजसिंह ने कहा, "उठिए, अपनी जगह पर चलिए, जो कुछ कहना है वहीं एकांत में कहेंगे।" बीरेन्द्रसिंह सम्हल गए और उठ खडे हुए। दोनों आदमी धीरे धीरे किले में आए और अपने कमरे में जाकर बैठे।

अब निराला है, सिवाय इन दोनों के इस समय इस कमरे में कोई नहीं है। बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से पूछा, "कहो क्या कहने को थे ? तेजसिंह ने कहा, "सुनिए, यह तो आपको मालूम हो ही चुका है कि क्रूरसिंह महाराज शिवदत्त से मदद लेने चुनार गया है। अब उसके वहाँ जाने का क्या नतीजा निकला वह भी सुनिए। वहाँ से महाराज शिवदत्त ने चार ऐयार और एक ज्योतिषी को उसके साथ कर दिया है, वह ज्योतिषी बहुत अच्छा रमल फेंकता है, नाजिम पहिले ही से उनके साथ है। अब इन लोगों की मण्डली भारी हो गई, ये लोग कम फसाद नहीं करेंगे, इसलिए मैं अर्ज करता हूँ कि आप सम्हले रहिये। मैं अब काम की फिक्र में जाता हूँ, मुझे

* चितारी—ऐयार।